श्रीगणेशायनमः ॥

नामशतक ॥

:o:

श्री रसिकराज चूड़ामणि कनकभवन बिहारणी बिहारणौ बिजयतेतराम् ॥ श्रीमन्मारुतनन्दन अंजनीनन्द वर्द्धनायनमः ॥

दोहा ॥

बन्दौं सीताराम पद सकल सुमंगल मूल ।
तासुनाम बरणौं कछुक जो मोपर अनुकूल ॥ १ ॥
राम नामके रसिक जे तिन पद रज ममशीश ।
शिवगणपति हनुमानशुक सनकादिक अहिईश २॥
बिधि नारद प्रह्लाद ध्रुव ब्यास घटज कबिराज ॥
लोमस गरुड़ भुशुंडि भृगु याज्ञवल्क्य भरद्वाज ॥३॥
श्रीबाणी गिरिजादितिय जीव चराचर छोर ।

राम नाम जिय सरस प्रिय तासुचरण शिरमोर॥४॥
राम नाम को कहिसके जानि सके को गाउ ।
यथा सिंधु खग चोंचभरि त्रिपित थाह नहिं पाउ ॥५॥
रामचरण निज बोध हित कहौं राम को नाम ।
सकल बासना मिटै जेहि चित्त लहे विश्राम ॥ ६ ॥
राम नाम के भीतरहिं जीव ब्रह्म त्रैलोक ।
सीकर पिवतपपील जल तिमिमैं कहत विशोक ॥७॥
रामप्रसाद प्रसादते रामचरण कछु गाइ ।
पौत्र जानिमोहिं कृपा करिसमुझतहिय हुलसाइ ॥८॥
रामचन्द्र को रूप है राम नाम सब अंग ।
कछुक कहतमति सरसमैं नामको अमितप्रसंग ॥९॥
धर्म धाम तन प्राण दै परमारथ करिलेव ।
मत मतांत पूरण बिना यह काहुहि नहिं देव ॥१०॥
प्रात्य न दूसरि देव कोउ बचन मानि यह लेव ।
रामउपासक दीन शुचि तेहि एकांत कहि देव ॥११॥

पढ़ि पढ़ाइ सिखिलेत जो बिन सतगुरु उपदेश।
कलीभूत नहिं होत तेहि यह प्रमानमत शेश॥१२॥
पूरण सतगुरु राम होइ उपदेशहिं निज नाम।
सोसतगुरु कहि भास जस तस भाषौं अभिराम१३॥
राम नाम में रेफ है शुभ पुनि तीनि अकार।
हल मकार पांचौं अमल सब कर कारण सार॥१४॥
राम नयन द्युति तेज छबि ज्योति रूप शिरधाम।
रेफ सोई परमात्मा साक्षी ब्रह्म अराम॥१५॥
सबरण तीन अकार जो राम रूप तन तेज।
प्रथम बदनद्युति मध्यउर अंतजान पगमेज॥१६॥
इच्छा राम मकार हल सम्पूरण अह्लाद।
जोयहि बिधि रामहिंलखे ताको मिटै बिषाद॥१७॥
रेफ रूप परमातमा आतम तीनि अकार।
ताते दूनो ब्रह्म कहि पूरि रहे संसार॥१८॥
रेफ रूप पर ब्रह्म सो जीव शुद्ध त्रिअकार।

प्रकृति हलंत मकारतें जब साधे ओंकार ॥ १९॥
एकै रूप अकार त्रै रमेउ रेफ तेहि माहिं ।
जगत प्रकाशक सबाद्यौ सहसा लखे न जाहिं॥२०॥
रेफ इष्ट योगी भजहिं ज्ञानी इष्ट अकार ।
राम रसिक दूनौ भजहिं दीरघ रास मकार ॥ २१॥
राम अर्थ योगी करहिं रमु क्रीड़ा ते राम ।
प्रणव संग आतम रमइ परमातम के धाम ॥ २२ ॥
रमु क्रीड़ा याते कहब रमेउ चराचर एक ।
राम कहत ताते निगम ज्ञानिन कीन्ह बिवेक॥२३॥
क्रम कांड़ी ऐसे कहहिं रमुक्रीड़ा अस होइ ।
प्रलयकाल जहँ जगरमै राम कहत श्रुति सोइ॥२४॥
राम भक्त अस कहत हैं सत्य कहत सब राम ।
रामरूप लखिको न रमु ताते राम सुनाम ॥ २५ ॥
जनकपुरी जे नारि नर परशुराम निष्काम ।
रमेउ राम छबि लखि भये ईश्वरते मुनिनाम ॥ २६ ॥

चित्रकूट मृग नारिनर बनचर कोल किरात।
रमेउराम छबिलखि बिवसमृगखग तृणतरुपात २७॥
छल तजि रमि रहि राक्षसी शोभा राम निहारि।
दंडक मुनि प्रभु लखि रमेउ पूरुषतेभये नारि॥ २८॥
बालि रमेउ लखि रामछबि तन अज अमरनलीन।
राम नामकहि तन तजेउ रामसखा निजकीन२९॥
भूलि गयउ रण राक्षसन लखि शोभा तन राम।
बधहिं कीश ते रामकहि जाहिं रामके धाम॥३०॥
रमेउ राम महँ नारि नर अवध चराचर जोइ।
गोप होत सब सँगगये रमुक्रीड़ा सोंहोइ॥ ३१॥
रसिक सर्व सबलै कहत रम बिहार को नाम।
रस बिहार मैं जो रमहिं रमुक्रीड़ा सोराम॥ ३२॥
नारायण को रूप है जोहै प्रथम रकार।
रेफ़ रकार में ब्रह्मसों महाबिष्णु सो अकार॥ ३३॥
मध्य अकार बिशुद्ध अति बासुदेव को जानि।

जोइ अकार मकार मैं महाशंभुको मानि ॥ ३४ ॥
हल मकार ते छरभएव अक्षर ब्रह्म अकार।
रेफ निरक्षर ब्रह्म कहि राम निरक्षर पार ॥ ३५ ॥
बेद ब्याकरण स्वर जिते बिन अकार नहिं होइ।
अंतर प्रगट स्वरूप है यह जाने सुखहोइ ॥ ३६ ॥
अर्द्ध अर्द्ध मात्रा मुलै राम नाम अंश अंश।
प्रणव तासुते होत है जेहि योगीश प्रशंस ॥ ३७ ॥
जो रकार तें रेफ भिन अर्द्ध मात्र तेहिं जानु।
भयवउकार अकार तेहि अर्द्ध अर्द्धसों मानु ॥ ३८ ॥
पूर मकार सो हल भएव अनुस्वार पुनि अर्द्ध।
तीनो मिलि ओंकार भव बड़ेन कहा स्वैबर्द्ध ॥ ३९ ॥
प्रथम अकार उकार लखु मध्य जो रही अकार।
बर्ण विपर्यय सूत्रकरि द्वौ मिलि होत ओकार ४० ॥
हल मकार अनुसार भव श्रुति तेहि लोप अकार।
रेफसु अंतर भूतराति बड़ेन मानि ओंकार ॥ ४१ ॥

बहुरि वेदमत मानिकै जानव प्रथम अकार।
मधि अकार शिरकल भईद्वौमिलि भई एकार॥ ४२
पुनि मकार अनुस्वार भव तेहिको अंश अकार।
सवरणमानि समीपई याहिबिधि भा ओंकार॥ ४३॥
पुनि व्याकरण सु बेदकछु अव्यय रेफहिं मानि।
होत बिसर्ग पदांतउ तबओकार पहिंचानि॥ ४४॥
रेफते भिन्न अकार जो श्रुति मत भई उकार।
मधि अकारके पूर्वगइ द्वौमिलि लखवओंकार॥ ४५॥
रेफसों दुइ गति उद्धकिं प्रणव के अंतर भूत।
व्यापि अकार उकारमा ब्रह्मरूप मणि सूत॥ ४६॥
हल मकार अनुसार भव श्रुति तेहि लोप अकार।
नादरूप सोइप्रणव मिलि समुझि लेव ओंकार ४७

॥ अथसूत्र ॥

हेतौ संयोग विश्लेषो लोपश्च॥ नहि

प्रयोजन मुद्दिश्यमन्दोपिप्रवर्त्तते ॥ अव्य रेफः ॥ सूत्र ॥ स्रोर्विसर्गः ॥

रेफकी बिसर्गः ॥ विसर्गको उकार अरु मध्य की अकार मिलिकै ओकार भै हल मकार अनुस्वार भै ओंकार सिद्धि भएव ॥

पुनिसूत्र ॥ औरत्यकादौ ॥

अकार परे होइ कै अकादि परे होइ ओकार होइ केबल रकारतें ओकार होइ औरत्यकादौ यहसूत्र करिकै मकार की अकनाम सतकर लोप छन्दसिसूत्र ॥

मोनुस्वारःगें ॥

दोहा ॥

जो उकार है प्रणव मैं ताको विधि पहिंचानि।
जोअकारसो विष्णुहै अनुस्वारहिं शिवजानि ४८॥

प्रणव सों त्रैहंकार भव सत रज तामस धार।
तीनोंप्रभु त्रैमिलि लियो ताते सब संसार॥ ४९॥
परम योग शुभ रेफ है परम विराग अकार।
मिलि अकार कारणपरम अग्निज्वालको सार ५०॥
जो यहिभांति रकारको जानि करै उच्चार।
तासु शुभाशुभ कर्मजो सकल होत संहार॥ ५१॥
परम ज्ञान विज्ञानमय मध्य अकार प्रकास।
सूर्य्य बीर्य्य जग तम हरत लखैरूप निजपास॥५२॥
भक्ति स्वरूप मकार है अमल चंद्रमा हेत।
प्रेमसुधा त्रैताप हर पोषत तोष सु खेत॥ ५३॥
रेफाकार सो शत्रुहन लक्ष्मण मध्य अकार।
भरत मकार सुप्रेममय भरन पोष संसार॥ ५४॥
जो मकार माया कहत ते मूरख अज्ञान।
पढ़ेउन वेद न मिलेउगुरु किमि मकार गतिजान ५५
प्रणव शीश अनुसार जो सो मकार तें होय।

ताते प्रकृति प्रचंड है झूठ कहेव किमि सोय ॥ ५६ ॥
पूर मकार तें हल भयव हल तें भा अनुसार ।
अनुस्वार मिलि प्रणवभो प्रणवते सब संसार ५७ ॥
जिमि सुरसरि जल अल्प लेइ करै बारूणी कोइ ।
सो बारुणि सुरसरि मिले गंगधार शुचिहोइ ५८ ॥
राम नाम जानहिं सोई जो रामहिं कर होइ ।
नामभेद सो तब लखै जक्त रीति सबखोइ ॥ ५९ ॥
सत रकार सु अकार चित मकार आनंदधाम ।
नाम सच्चिदानंद सोइ बाचक बाच्य श्रीराम ६० ॥
सत कहिये बिनशै नहीं अबिनाशी रसएक ।
वह काहूते होत नहिं वातें होत अनेक ॥ ६१ ॥
चित चेतन चैतन्य कृत ब्रह्म चराचर भास ।
अलष अलूपाचलअमल जिमिअकाशघटबास६२ ॥
आनँद नित्य अनंदनिधि नित बिहार सुखकंद ।
रहित समस्त बिकार तन रामसच्चिदानंद ॥ ६३ ॥

तत्पद ब्रह्म सुरेफ है त्वंपद जीव अकार।
हलमकार माया असी तत्त्वमसी श्रुतिसार ६४॥
अर्थ सच्चिदानंद को कहि न सकहिं श्रुतिशेश।
रामचरण सो किमि कहे रामनाम सब देश॥ ६५॥
मूर्द्धनि गगन रकार बस त्रिकुटी बास अकार।
जिह्वा बास मकारको निज निज थलउच्चार ६६॥
अर्द्धनाम योगी भजहिं मंडल तेज अकाश।
सोइ विधि सोहं ज्ञानिकर त्रिकुटी भजहिं प्रकाश ६७
रामभक्त जिह्वा भजहिं पूरण नाम उदार।
रामचरण यह अगममत कोइ कोइ जाननिहार ६८॥
प्राण संग योगी जपहिं ज्ञानी शब्द मिलाइ।
दास प्रेम मिश्रित जपहिं सबैधर्म्म होइजाइ॥६९॥
ज्ञानी योगी त्रिकुटि नभभजहिं जीभ बिन नाम।
मुक्ति होहिं परिभक्तिनहिं मूरति मिलै न राम७०॥
बालमीक प्रह्लाद ध्रुव गानिका यमन गवास।

अजामील गज जीभकहि भये रामके दास॥७१॥
रंजन करत रकार चित आनँद करत अकार।
मन माया मैं मोरहर भरती भक्ति मकार॥७२॥
बिना निरूपे नामके राम न जाने जाहिं।
अवतारी अवतारको अंश कला को आहिं॥७३॥
नामते कछु लखि परेउ अब अवतारी अवतार।
अंश कलासब एक प्रभु द्वै लखि बिनाबिचार॥७४॥
चारि खानि हैं नाममें कृया लाड़ गुण रूप।
चारि पदारथ देनकों चारिउ खानि अनूप॥७५॥
कृया नाम जस कर्म्म कृत जस सरूप तस नाम।
लाड़ दुलारको नामकहि गुण प्रभुता बल धाम७६॥
प्रथम नाम गुण रूप जो कृया मिलित नहिं होइ।
सतचित आनन्द रूप सो अवतारी प्रभुसोइ ७७।
मिलित कृया गुण नामजो सोपि अंश अवतार।
होइ नाम केवल कृया कला जक्त हितकार ७८॥

धर्म हेतु अवतार सब नाम अमित अवगाह।
प्रथम नाम यह कृया कहि मीन कच्छ बाराह॥७९॥
नर संज्ञा पूरुष सबै सब पुरुषन बड़ जोइ।
सोगुन नामनृसिंह पुनि कृया भांतिवपुदोइ॥८०॥
वा बिकल्पमन वां मनो लघु बपुकृपा सुनाम।
कहब छोट प्रभुता बड़ी सो बामन गुण धाम॥ ८१॥
परशुराम फरसा रमेउ कृयानाम अभिराम।
फलस परस सब राम मैं परशुराम गुणधाम॥८२॥
राम कृष्ण गुण नाम हैं बौध कल्किया नाम।
ब्रह्म बिष्णु हरिनारायण बासुदेव गुण नाम॥८३॥
प्रथम नामकहि गुण कृया कहौं नाम गुण भेद।
नाम भेद जाने बिना मिटै न जियको खेद॥ ८४॥
परम दिव्य गुण तीनि हैं सतचित आनँदकन्द।
प्रथम नाम तीनों मिलै सोइ सच्चिदानन्द॥ ८५॥
सतचित आनँद युक्त है राम शब्द सुबिचार।

सतानन्द दुइकृष्ण मिलि सुगुण अंश अवतार८६॥
कृषि भूवाचक शब्द सत नश्च निवृत्ति अनन्द ।
कृष्ण शब्द दूनौ मिलै परब्रह्म सुखकन्द ॥ ८७ ॥
सर्वव्यापी ब्रह्म कहि बिष्प्रवेशने होइ ।
हरि हरंति सब पापको हरत जक्त हरिसोइ ॥ ८८ ॥
नारजीव संज्ञा सबै जिय जेहि आश्रित होइ ।
सोनारायण नाम पुनि अयन नारनिधिसोइ ।८९
बासुदेव सब मैं बसै सबै बसै तेहि माहिं ।
बासुदेव बसुदेव सुत अर्थ समुझि भ्रम जाहिं ९० ॥
राम नाम सब नामको करत प्रकाश समात ।
कहिश्रुति सार बिचारि लै यह न पक्षकीबात ९१ ॥
राम शब्दते शब्द सबरम क्रीड़ा ते नाम ।
रामरूप तें रूपसब कला अंश गुणधाम ॥ ९२ ॥
रेफ अकार मकार हल जेहि अक्षर नहिं बास ।
रिचासूत्र श्लोक पद मंत्र तंत्र सब नास ॥ ९३ ॥

राम नाम ते होत सब सो काहू ते नाहिं।
पक्षपात हठ छोड़िके समुझिलेउमन माहिं॥ ८४॥
राम नाम चर अचर मैं रमेउ गगन पथ नीर।
जोयेंहि बिधिलखि गहिरहइ राम उपासकधीर ९५॥
मनक्रम बचन चराचरहि जो काहू दुख देइ।
राम रूप सब मैं रमित राम बिरोधी तेइ॥ ९६॥
जप तप दान अचार वृत जोग ज्ञान विज्ञान।
रामचरण साधन सकल नाम अधीन प्रमान ९७॥
नाम रूप लीला प्रभुत धाम धारणा पांच।
रामचरण यहपांचबिन राम उपासककांच॥ ९८॥
राम नामको शतक यह रचित अवधपुरसार।
रामचरण यह समुझि गहु अनायास भवपार॥ ९९॥
सीता कहि पुनि रामकहि परम गूढ़ रसजान।
रामचरण यह परममत राम द्वयत सुनिकान १००॥
सीताराम तकार ततत्त्वं पद दीर्घ अकार।

सो अकार लै सी असी तत्त्वमसी श्रुतिसार १०१॥
सी कहते शीतल करे कहि तकार तम नास ।
रामचरण आ कहतही निज सरूप प्रभुपास ॥ १०२

इति श्रीदृष्टांतबोधिकारामनामशतक सर्बशास्त्रसारभूत मंत्रार्थसारवर्णनं नामचतुर्थ शतकसमाप्तः ॥

पुस्तक मिलने का ठिकाना ॥

सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द
बम्बई बुकसेलर
अयोध्याजी